Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

बघेलखण्ड के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. अंकित सिंह
अतिथि विद्वान, इतिहास विभाग
पण्डित शम्भूनाथ विश्वविद्यालय शहडोल, जिला-शहडोल

सारांश (Abstract)

बघेलखण्ड मध्य भारत का एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है, जो वर्तमान मध्य प्रदेश के रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, अनूपपुर, उमरिया तथा शहडोल जिलों के साथ-साथ उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के कुछ सीमावर्ती भागों में विस्तृत है। विंध्य पर्वत श्रेणी की गोद में बसा यह प्रदेश प्राचीन काल से ही धार्मिक आस्था, तीर्थाटन और सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में बघेलखण्ड के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों, विशेष रूप से चित्रकूट, अमरकंटक, मैहर की शारदा देवी मंदिर, रीवा जिले का देवतालाब शिव मंदिर तथा बांधवगढ़ के धार्मिक-पुरातात्विक अवशेषों का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन ऐतिहासिक ग्रन्थों, रीवा राज्य के गजेटियरों, पुरातात्विक सर्वेक्षण प्रतिवेदनों तथा समकालीन शोध साहित्य पर आधारित है और इसमें ऐतिहासिक विवरणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बघेलखण्ड क्षेत्र न केवल धार्मिक आस्था का प्रमुख केन्द्र है, बल्कि इसके ऐतिहासिक स्थल क्षेत्रीय पर्यटन विकास, स्थानीय अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण तथा सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शोध पत्र के अंत में इन स्थलों के समुचित संरक्षण, अवसंरचनात्मक विकास एवं व्यवस्थित प्रचार-प्रसार हेतु व्यावहारिक सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं, जिससे बघेलखण्ड को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन मानचित्र पर समुचित स्थान प्राप्त हो सके।

मुख्य शब्द (Keywords)

बघेलखण्ड, धार्मिक पर्यटन, चित्रकूट, अमरकंटक, नर्मदा उद्गम, मैहर शारदा देवी, देवतालाब शिव मंदिर, बांधवगढ़, रीवा रियासत, ऐतिहासिक अध्ययन, विंध्य क्षेत्र, शक्तिपीठ।

प्रस्तावना

बघेलखण्ड नामक भू-सांस्कृतिक क्षेत्र का नामकरण बघेल राजवंश के नाम पर हुआ है, जिसने इस क्षेत्र पर सदियों तक शासन किया। इतिहासकारों के अनुसार बघेल वंश मूलतः गुजरात के सोलंकी अथवा चालुक्य राजपूतों की एक शाखा है। सन् 1234 ई. के लगभग व्याघ्रदेव नामक शासक गुजरात से चलकर अनेक तीर्थों का भ्रमण करते हुए चित्रकूट क्षेत्र में पहुँचे और वहाँ अपने राज्य की स्थापना की, जिससे सोलंकी वंश से बघेल वंश की उत्पत्ति हुई। कालान्तर में इस राजवंश ने बांधवगढ़ को अपनी राजधानी बनाया और लगभग 1400 ई. के आसपास एक सुसंगठित रियासत के रूप में बघेलखण्ड की स्थापना हुई। सन् 1597 ई. में मुगल सम्राट अकबर द्वारा बांधवगढ़ के विनाश के पश्चात् रीवा को नई राजधानी बनाया गया और इस प्रकार रीवा बघेलखण्ड की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक अस्मिता का केन्द्र बन गया। ब्रिटिश शासन काल में भी रीवा को बघेलखण्ड एजेंसी की राजधानी के रूप में मान्यता प्राप्त थी।

भौगोलिक दृष्टि से बघेलखण्ड विंध्य पर्वत श्रेणी का एक विस्तृत पठारी भाग है, जहाँ से नर्मदा, सोन, टमस (तमसा), महानदी (महाना) तथा बीहड़ जैसी अनेक नदियाँ उद्गमित होती हैं या प्रवाहित होती हैं। यही भौगोलिक विशिष्टता इस क्षेत्र को प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों की तपस्थली और धार्मिक चेतना के केन्द्र के रूप में स्थापित करती है। पौराणिक साहित्य, विशेषतः रामायण, महाभारत, शिवपुराण, मत्स्यपुराण तथा स्कन्दपुराण में इस क्षेत्र के अनेक स्थलों का उल्लेख प्राप्त होता है। भगवान श्रीराम ने अपने चौदह वर्ष के वनवास में से लगभग साढ़े ग्यारह वर्ष चित्रकूट में व्यतीत किए थे, जो इस क्षेत्र को रामायण कालीन इतिहास से जोड़ता है। इसी प्रकार अमरकंटक को नर्मदा एवं सोन नदी का उद्गम स्थल होने के कारण अत्यंत पवित्र माना जाता है, जबकि मैहर की शारदा देवी मंदिर इक्यावन शक्तिपीठों में से एक होने के कारण सम्पूर्ण भारत में विशिष्ट स्थान रखती है।

बघेलखण्ड की धार्मिक पर्यटन परम्परा केवल आस्था तक सीमित नहीं है, अपितु यह क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का अभिन्न अंग रही है। सदियों से यहाँ के मंदिर और तीर्थ स्थल स्थानीय जनजीवन, लोक-परम्पराओं, मेलों तथा उत्सवों के केन्द्र रहे हैं। कोल, गोंड तथा बैगा जैसी जनजातीय समुदायों की स्थानीय आस्था और लोक-देवताओं की पूजा-पद्धति भी इन प्रमुख धार्मिक स्थलों की परम्परा में समाहित होती चली गई, जिससे बघेलखण्ड का धार्मिक स्वरूप एक समन्वित सांस्कृतिक चरित्र प्राप्त करता है। वर्तमान समय में जब धार्मिक पर्यटन भारत के पर्यटन उद्योग का एक प्रमुख आधार बन चुका है, तब बघेलखण्ड के इन ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों का समुचित ऐतिहासिक एवं शैक्षणिक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है, जिसमें बघेलखण्ड के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों के ऐतिहासिक विकास, पौराणिक पृष्ठभूमि, स्थापत्य विशेषताओं तथा वर्तमान सन्दर्भ में उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से देखा जाए तो बघेलखण्ड की भूमि अनेक शासकीय परिवर्तनों की साक्षी रही है। कलचुरि वंश के पश्चात् इस क्षेत्र पर परमार, चंदेल तथा गोंड शासकों का भी प्रभाव रहा, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव यहाँ की धार्मिक स्थापत्य कला पर परिलक्षित होता है। बांधवगढ़ तथा अमरकंटक जैसे स्थलों पर विभिन्न कालखण्डों की स्थापत्य शैलियों का सम्मिश्रण इस बात का प्रमाण है कि बघेलखण्ड कभी भी सांस्कृतिक रूप से पृथक अथवा स्थिर क्षेत्र नहीं रहा, अपितु यह निरंतर विभिन्न राजनीतिक एवं सांस्कृतिक धाराओं से प्रभावित होता रहा। बघेल वंश के आगमन के पश्चात् इस क्षेत्र में एक स्थायी राजनीतिक व्यवस्था स्थापित हुई, जिसने धार्मिक स्थलों के संरक्षण एवं विस्तार को संस्थागत रूप प्रदान किया। रीवा रियासत के महाराजाओं ने न केवल मंदिरों के निर्माण एवं जीर्णोद्धार में योगदान दिया, अपितु धार्मिक मेलों, पंचांग-प्रकाशन तथा संस्कृत विद्या के संरक्षण में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई, जिससे बघेलखण्ड की धार्मिक चेतना निरंतर समृद्ध होती रही।

साहित्यिक समीक्षा की दृष्टि से देखा जाए तो बघेलखण्ड के धार्मिक स्थलों पर पृथक-पृथक रूप से अनेक विवरणात्मक एवं पर्यटन-केन्द्रित सामग्री उपलब्ध है, जैसे रीवा राज्य के गजेटियर, स्थानीय समाचार-पत्रों के विशेष प्रतिवेदन तथा पर्यटन विभाग की प्रचार-सामग्री। परन्तु इन समस्त स्थलों को एक समग्र ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जोड़कर, उनके अंतर्संबंधों तथा बघेलखण्ड की सम्पूर्ण धार्मिक भूगोल के रूप में विश्लेषित करने वाले शोध कार्य अभी भी अपेक्षाकृत सीमित हैं। यही शोध-रिक्तता प्रस्तुत अध्ययन की प्रेरणा है। इस शोध पत्र में यह प्रयास किया गया है कि पौराणिक आख्यानों, ऐतिहासिक अभिलेखों, पुरातात्विक साक्ष्यों तथा समकालीन प्रशासनिक दस्तावेजों का समन्वित विश्लेषण करते हुए बघेलखण्ड के धार्मिक पर्यटन स्थलों की एक सुसंगत ऐतिहासिक तस्वीर प्रस्तुत की जाए।

बघेलखण्ड के धार्मिक जीवन की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यहाँ के वार्षिक मेले, पर्व एवं उत्सव हैं, जो धार्मिक स्थलों के इतिहास को जीवंत बनाए रखते हैं। मैहर में नवरात्रि तथा मकर संक्रांति के अवसर पर लगने वाला विशाल मेला, देवतालाब में श्रावण मास का प्रसिद्ध मेला, अमरकंटक में नर्मदा जयंती तथा नर्मदा परिक्रमा के अवसर पर होने वाले धार्मिक आयोजन, तथा चित्रकूट में दीपावली के समय होने वाली विशाल परिक्रमा, ये सभी उत्सव न केवल धार्मिक आस्था अपितु सामाजिक एकजुटता तथा क्षेत्रीय पहचान के भी प्रमुख अवसर हैं। इन मेलों के दौरान क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में भी अस्थायी परन्तु महत्वपूर्ण उछाल देखा जाता है, जिससे स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों तथा सेवा-प्रदाताओं को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है। यह तथ्य इस बात को और अधिक पुष्ट करता है कि बघेलखण्ड के धार्मिक स्थलों का अध्ययन केवल ऐतिहासिक स्थापत्य तक सीमित नहीं रहना चाहिए, अपितु इसमें उनसे सम्बद्ध सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों का भी समावेश आवश्यक है।

शोध पत्र का उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं। सर्वप्रथम, बघेलखण्ड क्षेत्र की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में इसकी धार्मिक पर्यटन परम्परा के विकास-क्रम का विश्लेषण करना इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य है। द्वितीयतः, इस शोध पत्र के माध्यम से चित्रकूट, अमरकंटक, मैहर की शारदा देवी मंदिर, रीवा का देवतालाब शिव मंदिर तथा बांधवगढ़ जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों के ऐतिहासिक, पौराणिक तथा पुरातात्विक महत्व का सूक्ष्म एवं तथ्यपरक अध्ययन प्रस्तुत करना है। तृतीयतः, इन धार्मिक स्थलों के स्थापत्य स्वरूप, निर्माण काल तथा उनसे सम्बद्ध ऐतिहासिक राजवंशों, विशेष रूप से कलचुरि एवं बघेल वंश की भूमिका को स्पष्ट करना भी इस अध्ययन का उद्देश्य है। चतुर्थतः, इन धार्मिक स्थलों के वर्तमान पर्यटन स्वरूप, उनकी अवसंरचनात्मक स्थिति तथा क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव का आकलन करना भी इस शोध पत्र का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। अंततः, इस अध्ययन के आधार पर बघेलखण्ड के धार्मिक पर्यटन स्थलों के संरक्षण, विकास तथा प्रचार-प्रसार हेतु व्यावहारिक एवं क्रियान्वयन-योग्य सुझाव प्रस्तुत करना भी इस शोध कार्य का अभिन्न लक्ष्य है। इसके साथ ही यह शोध पत्र बघेलखण्ड के धार्मिक स्थलों से सम्बद्ध लोक-परम्पराओं, मेलों तथा उत्सवों का भी संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करना चाहता है, जिससे इन स्थलों के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम को भी उचित महत्व दिया जा सके तथा इतिहास लेखन की समग्रता सुनिश्चित हो सके।

शोध पत्र का महत्व-

प्रस्तुत शोध पत्र अनेक दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह अध्ययन बघेलखण्ड क्षेत्र के उन धार्मिक स्थलों के विकास-क्रम को उजागर करता है, जिनका सम्बन्ध प्राचीन कलचुरि वंश, मध्यकालीन बघेल राजवंश तथा आधुनिक रीवा रियासत से रहा है। इस प्रकार यह शोध पत्र क्षेत्रीय इतिहास लेखन में एक सार्थक योगदान प्रस्तुत करता है, क्योंकि बघेलखण्ड के धार्मिक इतिहास पर केन्द्रित समग्र एवं तुलनात्मक अध्ययन अभी भी अपेक्षाकृत सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से यह अध्ययन क्षेत्र की लोक-आस्था, परम्पराओं तथा जनजातीय एवं हिन्दू धार्मिक चेतना के समन्वित स्वरूप को रेखांकित करता है, जो बघेलखण्ड की सांस्कृतिक पहचान को समझने में सहायक है।

आर्थिक एवं विकासात्मक दृष्टि से यह शोध पत्र अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि धार्मिक पर्यटन वर्तमान समय में क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण का एक प्रमुख माध्यम बन चुका है। मध्य प्रदेश शासन एवं भारत सरकार द्वारा धार्मिक पर्यटन के विकास हेतु विभिन्न योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही हैं, जिनमें देवतालाब जैसे स्थलों के सौंदर्यीकरण एवं विस्तारीकरण की योजनाएँ सम्मिलित हैं। ऐसी स्थिति में यह शोध पत्र नीति-निर्माताओं, पर्यटन

विभाग तथा शोधार्थियों के लिए एक सन्दर्भ सामग्री का कार्य कर सकता है। शैक्षणिक दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र तथा पर्यटन प्रबंधन जैसे विषयों के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए बघेलखण्ड के धार्मिक भूगोल को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

सामाजिक दृष्टि से भी यह शोध पत्र विशेष महत्व रखता है, क्योंकि धार्मिक पर्यटन स्थल न केवल आस्था के केन्द्र होते हैं, अपितु वे स्थानीय रोजगार सृजन, हस्तशिल्प, लघु व्यवसाय तथा आतिथ्य उद्योग के विकास का भी माध्यम बनते हैं। बघेलखण्ड जैसे अपेक्षाकृत अल्प-विकसित क्षेत्र में, जहाँ औद्योगिक विकास सीमित है, धार्मिक पर्यटन के सुव्यवस्थित प्रबंधन से स्थानीय जनसंख्या, विशेष रूप से ग्रामीण एवं जनजातीय समुदायों, को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। इसके अतिरिक्त यह शोध पत्र क्षेत्रीय अस्मिता एवं गौरव की भावना को भी सुदृढ़ करता है, क्योंकि यह बघेलखण्ड की समृद्ध धार्मिक एवं ऐतिहासिक विरासत को व्यवस्थित एवं प्रमाणिक रूप में प्रस्तुत करके स्थानीय जनमानस में अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति गर्व एवं जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक है।

बघेलखण्ड के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों का ऐतिहासिक अध्ययन-

बघेलखण्ड क्षेत्र में अनेक धार्मिक पर्यटन स्थल विद्यमान हैं, परन्तु ऐतिहासिक, पौराणिक तथा पर्यटकीय महत्व की दृष्टि से चित्रकूट, अमरकंटक, मैहर की शारदा देवी मंदिर, रीवा जिले का देवतालाब शिव मंदिर तथा बांधवगढ़ के धार्मिक-पुरातात्विक अवशेष विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस अध्ययन में इन स्थलों का चयन तीन प्रमुख आधारों पर किया गया है, अर्थात उनकी पौराणिक प्राचीनता, उनसे सम्बद्ध ऐतिहासिक स्थापत्य के प्रमाण, तथा वर्तमान समय में उनकी पर्यटकीय सक्रियता। इन तीन आधारों पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त स्थल न केवल स्थानीय अपितु राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी बघेलखण्ड की धार्मिक पहचान के प्रतिनिधि केन्द्र माने जा सकते हैं। इन प्रत्येक स्थल का ऐतिहासिक विवरण एवं विश्लेषण निम्नलिखित है।

चित्रकूट : रामायण कालीन तीर्थ स्थल

चित्रकूट, जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले तथा मध्य प्रदेश के सतना जिले की सीमा पर विंध्य पर्वत श्रेणी के मध्य स्थित है, बघेलखण्ड के सर्वाधिक प्राचीन एवं पौराणिक महत्व के धार्मिक स्थलों में से एक है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान श्रीराम ने अपने चौदह वर्षीय वनवास में से लगभग साढ़े ग्यारह वर्ष चित्रकूट में व्यतीत किए थे, जिस कारण इस स्थल को श्रीराम की कर्मभूमि के रूप में जाना जाता है। मंदाकिनी तथा पयस्विनी नदियों के संगम स्थल पर स्थित रामघाट, जहाँ मान्यता है कि श्रीराम ने अपने पिता राजा दशरथ का पिण्डदान किया था, इस स्थल का प्रमुख तीर्थ केन्द्र है। इसके समीप स्थित कामदगिरि पर्वत, जिसकी परिक्रमा को अत्यंत पुण्यकारी माना

जाता है, तथा हनुमान धारा, स्फटिक शिला और अनुसुइया आश्रम जैसे स्थल भी इस क्षेत्र की धार्मिक विरासत के महत्वपूर्ण अंग हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से चित्रकूट सदियों से विभिन्न राजवंशों के संरक्षण में मंदिर निर्माण एवं धार्मिक अनुष्ठानों का केन्द्र रहा है। यहाँ के मत्गजेन्द्रनाथ मंदिर में भगवान शिव के चार रुद्रावतार रूपों की प्रतिष्ठा की गई है, जिनमें से एक प्रतिमा को अत्यंत प्राचीन काल में स्थापित माना जाता है। चित्रकूट का धार्मिक महत्व केवल हिन्दू परम्परा तक सीमित नहीं है, अपितु यह क्षेत्र सांस्कृतिक समन्वय का भी प्रतीक है, जहाँ विभिन्न कालखण्डों में सन्त-महात्माओं, विशेष रूप से तुलसीदास जी का प्रवास तथा साहित्य-सृजन हुआ। बघेलखण्ड के अंतर्गत यह क्षेत्र न केवल धार्मिक अपितु ऐतिहासिक स्थापत्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ के प्राचीन घाट, कुण्ड तथा मंदिर स्थानीय स्थापत्य शैली एवं धार्मिक स्थापत्य के विकास-क्रम को प्रदर्शित करते हैं। वर्तमान समय में चित्रकूट भारत सरकार द्वारा विकसित प्रमुख आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों में सम्मिलित है और यहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु एवं पर्यटक आते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है।

बघेलखण्ड के सन्दर्भ में चित्रकूट का विशेष महत्व यह भी है कि यह क्षेत्र बघेल राजवंश की उत्पत्ति-स्थली से भी जुड़ा हुआ है, क्योंकि व्याघ्रदेव ने अपनी यात्रा के दौरान इसी क्षेत्र में सर्वप्रथम अपने राज्य की नींव रखी थी। इस प्रकार चित्रकूट न केवल धार्मिक अपितु बघेलखण्ड की राजनीतिक अस्मिता के उद्गम से भी सम्बद्ध है। कालान्तर में सतना जिले का चित्रकूट नगर, जो मध्य प्रदेश की सीमा में स्थित है, उत्तर प्रदेश के चित्रकूट नगर से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ विकसित हुआ, जिससे यह पूरा क्षेत्र एक अंतर्राज्यीय धार्मिक परिक्षेत्र के रूप में कार्य करता है। वर्तमान में मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश दोनों राज्य सरकारों द्वारा चित्रकूट के समन्वित पर्यटन विकास हेतु संयुक्त प्रयास किए जा रहे हैं, जो इस स्थल के अंतर्राज्यीय धार्मिक-पर्यटन महत्व को और अधिक स्पष्ट करते हैं। रामायण-कालीन स्थलों की प्रामाणिकता एवं संरक्षण की दृष्टि से चित्रकूट को केन्द्र सरकार की 'स्वदेश दर्शन' तथा तीर्थाटन विकास योजनाओं में भी सम्मिलित किया गया है, जो इसके राष्ट्रीय महत्व को प्रमाणित करता है।

अमरकंटक : नर्मदा एवं सोन नदी का उद्गम स्थल

अमरकंटक, जो वर्तमान मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित है, बघेलखण्ड के सबसे पवित्र एवं ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध धार्मिक स्थलों में से एक माना जाता है। समुद्र तल से लगभग एक हजार मीटर से अधिक ऊँचाई पर स्थित यह स्थल भारत की दो प्रमुख नदियों, नर्मदा एवं सोन, के उद्गम स्थल होने के कारण अत्यंत पवित्र माना जाता है। मैकल पर्वत श्रेणी के अंतर्गत स्थित अमरकंटक को पौराणिक ग्रन्थों में ऋक्षपर्वत के एक भाग के रूप में वर्णित किया गया है, जिसे सप्तकुल पर्वतों में सम्मिलित किया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार यह क्षेत्र देवी सती के

दो अंगों के पतन से सम्बद्ध होने के कारण शक्तिपीठ क्षेत्र के रूप में भी पूजित है, जिनमें से एक शक्तिपीठ नर्मदा के उद्गम स्थल के समीप देवी पार्वती के मंदिर के रूप में स्थित है।

ऐतिहासिक दृष्टि से अमरकंटक का सबसे उल्लेखनीय स्थापत्य कलचुरि कालीन मंदिर समूह है, जिसका निर्माण कलचुरि नरेश कर्णदेव के शासनकाल में सन् 1041 से 1073 ई. के मध्य कराया गया था। नर्मदा कुण्ड के चतुर्दिक निर्मित सोलह प्राचीन प्रस्तर मंदिरों का समूह इस स्थापत्य कला का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिनमें नर्मदा एवं शिव मंदिर, कार्तिकेय मंदिर, श्रीराम जानकी मंदिर, अन्नपूर्णा मंदिर, सूर्यनारायण मंदिर तथा एकादश रुद्र मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कर्ण मंदिर एवं पातालेश्वर मंदिर भी इसी कलचुरि स्थापत्य परम्परा के प्रतिनिधि उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त कपिलधारा तथा दुग्धधारा जल-प्रपात, जो नर्मदा नदी के प्रारम्भिक प्रवाह मार्ग में स्थित हैं, इस स्थल के प्राकृतिक एवं धार्मिक महत्व को और अधिक बढ़ाते हैं। अमरकंटक को तीर्थ, श्राद्ध-स्थान तथा सिद्ध क्षेत्र के रूप में भी विशेष मान्यता प्राप्त है और यह स्थल जैन तथा हिन्दू दोनों परम्पराओं में समान रूप से पूजित रहा है, जो इसके सांस्कृतिक समन्वय को दर्शाता है।

प्रशासनिक दृष्टि से अमरकंटक वर्तमान में अनूपपुर जिले के अंतर्गत आता है, परन्तु ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से यह सम्पूर्ण बघेलखण्ड क्षेत्र के लिए एक साझा तीर्थ-भूमि का स्वरूप रखता है, क्योंकि नर्मदा नदी अपने उद्गम से आगे बढ़ते हुए बघेलखण्ड की सीमाओं को स्पर्श करती हुई प्रवाहित होती है, जिससे इस क्षेत्र के अनेक ग्रामीण एवं नगरीय समुदायों में नर्मदा-परिक्रमा तथा नर्मदा-स्नान की परम्परा अत्यंत प्रचलित है। अमरकंटक में स्थापित कल्याण आश्रम, नर्मदा उद्गम मंदिर समिति तथा विभिन्न संत-परम्पराओं के मठ इस स्थल को न केवल एक तीर्थ अपितु एक जीवंत आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में भी स्थापित करते हैं, जहाँ वर्षपर्यंत विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ तथा सत्संग आयोजित होते रहते हैं। मध्य प्रदेश शासन द्वारा अमरकंटक को भी प्रमुख धार्मिक एवं पारिस्थितिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिसमें नर्मदा उद्गम क्षेत्र के संरक्षण तथा वहाँ की जैव-विविधता के सुरक्षण को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है।

मैहर की शारदा देवी मंदिर : शक्तिपीठ की परम्परा

मैहर, जो वर्तमान मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित है, त्रिकूट पर्वत की चोटी पर विराजमान माँ शारदा देवी मंदिर के कारण सम्पूर्ण भारत में विख्यात है। यह मंदिर भारत के इक्यावन शक्तिपीठों में से एक माना जाता है, जिसकी उत्पत्ति की कथा देवी सती के आत्मदाह तथा भगवान शिव के तांडव नृत्य से सम्बद्ध पौराणिक आख्यान से जुड़ी हुई है। लगभग छह सौ फुट की ऊँचाई पर स्थित इस मंदिर तक पहुँचने के लिए श्रद्धालुओं को एक हजार से अधिक सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं, यद्यपि वर्तमान समय में रोपवे की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है, जिससे यात्रा सुगम हो गई है।

मैहर के धार्मिक इतिहास में आल्हा और ऊदल नामक वीर योद्धाओं की कथा अत्यंत प्रचलित है। स्थानीय परम्परा के अनुसार पृथ्वीराज चौहान के समकालीन इन दोनों योद्धाओं ने घने वनों के मध्य इस मंदिर की खोज की थी और आल्हा ने बारह वर्षों तक कठोर तपस्या करके देवी को प्रसन्न किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें अमरत्व का वर प्राप्त हुआ। इसी कारण आज भी यह मान्यता प्रचलित है कि मंदिर के कपाट बंद होने के पश्चात् आल्हा प्रतिदिन प्रातःकाल देवी की प्रथम आरती करने आते हैं। मंदिर परिसर में आल्हा से सम्बद्ध अखाड़ा तथा तालाब भी सुरक्षित हैं, जो इस लोक-कथा की जीवंतता को प्रदर्शित करते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से भी मैहर का यह मंदिर अत्यंत प्राचीन है और अनेक शिलालेखीय एवं परम्परागत साक्ष्यों के अनुसार इस स्थल पर पूजा-अर्चना की परम्परा ईसा पूर्व काल से चली आ रही है। यह मान्यता भी प्रचलित है कि आदि गुरु शंकराचार्य ने भी इस शक्तिपीठ की यात्रा की थी, जिससे इसका महत्व अद्वैत वेदांत परम्परा से भी जुड़ जाता है। नवरात्रि एवं मकर संक्रांति के अवसर पर यहाँ लाखों श्रद्धालुओं का समागम होता है, जो इस स्थल को बघेलखण्ड के सर्वाधिक जनप्रिय धार्मिक पर्यटन केन्द्रों में से एक बनाता है।

मैहर का सांगीतिक इतिहास भी उल्लेखनीय है, क्योंकि इस नगर का सम्बन्ध मैहर घराना नामक शास्त्रीय संगीत परम्परा से भी रहा है, जिसकी स्थापना में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ का महत्वपूर्ण योगदान रहा। यह तथ्य मैहर को केवल धार्मिक अपितु सांस्कृतिक पर्यटन की दृष्टि से भी विशिष्ट बनाता है। रीवा रियासत तथा समीपवर्ती मैहर रियासत, जो स्वयं भी बघेलखण्ड की एक महत्वपूर्ण देशी रियासत थी, दोनों ने शारदा देवी मंदिर के जीर्णोद्धार तथा विस्तार में सक्रिय भूमिका निभाई। वर्तमान में सतना जिला प्रशासन तथा मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा मैहर को एक प्रमुख शक्तिपीठ पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ रोपवे, पेयजल, आवास तथा यातायात सुविधाओं में निरंतर सुधार किया जा रहा है, जिससे प्रतिवर्ष यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

देवतालाब शिव मंदिर, रीवा : स्थापत्य एवं लोक-आस्था का संगम

रीवा जिले में स्थित देवतालाब शिव मंदिर बघेलखण्ड के सर्वाधिक रहस्यमय एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में सम्मिलित है। श्रृंगेश्वरनाथ के रूप में पूजित इस मंदिर से सम्बद्ध पौराणिक आख्यान महर्षि मार्कण्डेय से जोड़ा जाता है, जो जन्म से ही शिवभक्त थे और जिन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों पर शिवलिंगों की स्थापना की थी। स्थानीय परम्परा के अनुसार यह विशाल मंदिर एक ही रात्रि में निर्मित हुआ था और इसकी रचना स्वयं भगवान विश्वकर्मा द्वारा की गई थी। यह भी उल्लेखनीय है कि यह मंदिर एक ही विशाल प्रस्तर खंड से निर्मित माना जाता है, जो प्राचीन स्थापत्य कला की एक विशिष्ट एवं अद्वितीय तकनीक का परिचायक है।

देवतालाब मंदिर परिसर का नामकरण उसके चतुर्दिक स्थित अनेक तालाबों के कारण हुआ है, जिनमें शिवकुण्ड नामक जलाशय विशेष धार्मिक महत्व रखता है। मान्यता है कि इस कुण्ड के जल से पंचशिवलिंगों का अभिषेक करने पर श्रद्धालुओं की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। कालान्तर में रीवा रियासत के महाराजाओं ने इस मंदिर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, गर्भगृह में मुख्य शिवलिंग के समीप चार अन्य शिवलिंगों की स्थापना करवाई तथा मंदिर के चारों दिशाओं में चार अन्य उपमंदिरों का निर्माण कराया। यह तथ्य इस स्थल की निरंतर विकसित होती संरचनात्मक परम्परा को स्पष्ट करता है, जो कि कलचुरि स्थापत्य शैली से भी प्रभावित प्रतीत होती है। यह भी मान्यता प्रचलित है कि देवतालाब में स्थित श्रृंगेश्वरनाथ भगवान के दर्शन के बिना चारों धामों की यात्रा सम्पूर्ण नहीं मानी जाती, जिससे इस स्थल का धार्मिक महत्व अखिल भारतीय स्तर पर स्थापित होता है। वर्तमान में मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा इस मंदिर परिसर के सौंदर्यीकरण एवं विस्तारीकरण हेतु महत्वपूर्ण योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही हैं, जो इस स्थल की पर्यटन सम्भावनाओं को और अधिक विकसित करेंगी।

देवतालाब की भौगोलिक स्थिति भी इसके धार्मिक महत्व को बढ़ाती है, क्योंकि यह स्थल रीवा नगर से अपेक्षाकृत निकट स्थित है, जिससे यह स्थानीय जनमानस के दैनिक धार्मिक जीवन का भी अभिन्न अंग बन गया है। श्रावण मास में यहाँ आयोजित होने वाला वार्षिक मेला बघेलखण्ड क्षेत्र के सबसे बड़े धार्मिक समागमों में से एक माना जाता है, जिसमें न केवल रीवा जिले अपितु सतना, सीधी तथा सिंगरौली जैसे समीपवर्ती जिलों से भी हजारों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं। इस मेले का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व यह भी है कि यह क्षेत्रीय व्यापार, हस्तशिल्प तथा लोक-कला की प्रस्तुति का भी एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है, जिससे धार्मिक पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था के बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित होता है।

बांधवगढ़ : प्राचीन गुफा मंदिरों एवं पुरातात्विक अवशेषों का केन्द्र

बांधवगढ़, जो वर्तमान में उमरिया जिले में स्थित है, बघेलखण्ड की प्राचीनतम राजधानी होने के साथ-साथ धार्मिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है। पौराणिक मान्यता के अनुसार बांधवगढ़ का नामकरण 'बांधव' अर्थात भ्राता से सम्बद्ध है, जिसके विषय में कथा प्रचलित है कि भगवान श्रीराम ने यह दुर्ग अपने भ्राता लक्ष्मण को उपहार में दिया था। बांधवगढ़ दुर्ग का सम्बन्ध नारद पंचरात्र तथा शिवपुराण जैसे प्राचीन ग्रन्थों से भी जोड़ा जाता है, जिससे इसकी पौराणिक प्राचीनता प्रमाणित होती है। यह दुर्ग भारत के प्राचीनतम दुर्गों में से एक माना जाता है, जिसकी स्थापना दो हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन बताई जाती है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किए गए हाल के उत्खनन एवं सर्वेक्षण कार्यों में बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के अंतर्गत लगभग एक सौ पचहत्तर वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में नवीं शताब्दी तथा उससे भी प्राचीन काल के छब्बीस मंदिर,

छब्बीस गुफाएँ, दो बौद्ध मठ, दो स्तूप, चौबीस अभिलेख तथा छियालीस कलाकृतियाँ प्राप्त हुई हैं। इन गुफाओं में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण अभिलेखों में मथुरा, कौशाम्बी जैसे विभिन्न प्राचीन नगरों का उल्लेख मिलता है तथा इनमें भीमसेन, महाराजा पोथासिरी एवं महाराजा भट्टादेवा जैसे प्राचीन शासकों के नाम भी उल्लिखित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि बांधवगढ़ क्षेत्र प्राचीन काल में एक महत्वपूर्ण धार्मिक तथा प्रशासनिक केन्द्र रहा है, जहाँ हिन्दू एवं बौद्ध दोनों परम्पराओं का सह-अस्तित्व विद्यमान था। मध्यकाल में बघेल वंश ने बांधवगढ़ को अपनी राजधानी बनाया, परन्तु सन् 1597 ई. में मुगल सम्राट अकबर द्वारा इस दुर्ग के विनाश के पश्चात् बघेल शासकों ने रीवा को नई राजधानी के रूप में स्थापित किया। आज बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के रूप में विश्वप्रसिद्ध होने के साथ-साथ अपने प्राचीन धार्मिक-पुरातात्विक अवशेषों के कारण भी शोधार्थियों तथा पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

गोविंदगढ़ : राम-गोविन्द मंदिर एवं ग्रीष्मकालीन राजधानी

रीवा नगर से लगभग अठारह किलोमीटर की दूरी पर स्थित गोविंदगढ़ बघेल राजवंश की ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप में विकसित किया गया था। यहाँ स्थित विशाल झील के तट पर निर्मित गोविंदगढ़ का दुर्ग एवं महल परिसर बघेल शासकों की स्थापत्य रुचि तथा प्रशासनिक दूरदर्शिता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस महल परिसर के भीतर स्थित राम-गोविन्द मंदिर इस स्थल के धार्मिक महत्व का केन्द्र-बिन्दु है, जहाँ रघुनाथ जी की उपासना की परम्परा शताब्दियों से चली आ रही है। इसके अतिरिक्त परिसर में राघव महल, बादल महल, उल्टा महल, आनंदगढ़ तथा दरिया महल जैसी अनेक ऐतिहासिक संरचनाएँ भी स्थित हैं, जो रीवा रियासत की राजसी जीवन-शैली तथा धार्मिक अनुष्ठानों के समन्वय को प्रदर्शित करती हैं। गोविंदगढ़ की झील में नौकायन तथा प्राकृतिक सौंदर्य के साथ धार्मिक स्थापत्य का यह संगम इसे बघेलखण्ड के उन विशिष्ट स्थलों में सम्मिलित करता है, जहाँ आस्था, इतिहास तथा प्राकृतिक पर्यटन एक साथ अनुभव किए जा सकते हैं। रीवा दुर्ग एवं संग्रहालय, जो नगर के मध्य में स्थित है तथा बघेल वंश की राजधानी के रूप में कार्य करता रहा, भी इस समग्र धार्मिक-ऐतिहासिक परिदृश्य का महत्वपूर्ण अंग है, जहाँ रियासतकालीन पुरावस्तुओं तथा राजसी प्रतीकों का संग्रहालय स्थापित है।

बांधवगढ़ का महत्व इस दृष्टि से भी विशिष्ट है कि यह स्थल धार्मिक पर्यटन एवं वन्यजीव पर्यटन का एक अद्वितीय संगम प्रस्तुत करता है। बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, जो अपनी बाघों की सघन जनसंख्या तथा विश्व के पहले श्वेत बाघ मोहन की खोज-स्थली होने के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है, अपने भीतर ही इन प्राचीन धार्मिक-पुरातात्विक अवशेषों को भी समेटे हुए है। इस कारण बांधवगढ़ आने वाले पर्यटक, जो प्रायः वन्यजीव दर्शन के उद्देश्य से यहाँ आते हैं, अनायास ही इस क्षेत्र के प्राचीन धार्मिक इतिहास से भी परिचित हो जाते हैं। यह दुहरी विशेषता बांधवगढ़ को बघेलखण्ड के धार्मिक पर्यटन मानचित्र में एक विशिष्ट एवं बहुआयामी स्थान प्रदान करती है, तथा भविष्य में

सुव्यवस्थित प्रबंधन के माध्यम से इसे धार्मिक-पुरातात्विक एवं प्राकृतिक पर्यटन के समन्वित मॉडल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

अन्य सहायक धार्मिक स्थल

उपर्युक्त प्रमुख स्थलों के अतिरिक्त बघेलखण्ड क्षेत्र में अनेक अन्य धार्मिक स्थल भी विद्यमान हैं, जो क्षेत्रीय धार्मिक पर्यटन को समृद्ध करते हैं। सतना जिले में स्थित बगेश्वरनाथ मंदिर तथा चाकघाट क्षेत्र के प्राचीन मंदिर समूह, चचाई एवं बीहर नदी क्षेत्र में स्थित प्राकृतिक-धार्मिक स्थल, तथा सीधी एवं सिंगरौली जिलों में स्थित विभिन्न स्थानीय शक्तिपीठ एवं शिवालय भी इस क्षेत्र की धार्मिक विविधता को दर्शाते हैं। इसी प्रकार शहडोल एवं उमरिया जिलों की सीमा पर स्थित अनेक छोटे-छोटे प्राचीन मंदिर एवं जनजातीय पूजा-स्थल भी बघेलखण्ड की धार्मिक भौगोलिकता का अभिन्न अंग हैं, यद्यपि इनका विस्तृत ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण अभी भी अपेक्षित है। यह भी उल्लेखनीय है कि इन स्थानीय स्थलों में से अनेक का सम्बन्ध जनजातीय लोक-देवताओं, वीर पुरुषों की स्मृति में स्थापित छत्रियों, तथा ग्राम-देवताओं की पूजा-परम्परा से है, जो बघेलखण्ड की धार्मिक संरचना में शास्त्रीय हिन्दू परम्परा एवं लोक-परम्परा के बीच की सेतु का कार्य करते हैं। इन स्थलों का वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समुचित दस्तावेजीकरण भविष्य के शोध कार्यों के लिए एक महत्वपूर्ण एवं उर्वर क्षेत्र प्रस्तुत करता है।

वर्तमान पर्यटन परिदृश्य एवं चुनौतियाँ-

बघेलखण्ड के धार्मिक पर्यटन स्थलों के वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि मैहर, चित्रकूट तथा अमरकंटक जैसे स्थलों पर प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालुओं का आगमन होता है, तथापि देवतालाब, बांधवगढ़ तथा गोविंदगढ़ जैसे स्थल अभी भी अपनी पूर्ण पर्यटन सम्भावना का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसका एक प्रमुख कारण समुचित प्रचार-प्रसार का अभाव है, क्योंकि इन स्थलों की जानकारी अधिकांशतः स्थानीय स्तर तक ही सीमित रह जाती है और राष्ट्रीय स्तर पर इनकी पहचान अपेक्षाकृत कम है। दूसरा प्रमुख कारण अवसंरचनात्मक सीमाएँ हैं, जिनमें दूरस्थ स्थानों तक उचित सड़क सम्पर्क, गुणवत्तापूर्ण आवास सुविधा तथा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता व्यवस्था की कमी सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त बांधवगढ़ जैसे स्थलों पर धार्मिक अवशेष होने के बावजूद इन्हें प्रायः केवल वन्यजीव पर्यटन के परिप्रेक्ष्य में ही प्रचारित किया जाता है, जिससे उनके धार्मिक-ऐतिहासिक महत्व की अलग से पहचान स्थापित नहीं हो पाती। इन चुनौतियों के समाधान हेतु समन्वित योजना-निर्माण, अंतर-विभागीय सहयोग तथा सतत पर्यटन के सिद्धांतों का पालन अत्यंत आवश्यक है, जिससे बघेलखण्ड के धार्मिक स्थलों का विकास पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक दृष्टि से संतुलित रूप में हो सके।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बघेलखण्ड क्षेत्र भारत के धार्मिक एवं ऐतिहासिक भूगोल में एक विशिष्ट तथा समृद्ध स्थान रखता है। चित्रकूट, अमरकंटक, मैहर की शारदा देवी मंदिर, देवतालाब शिव मंदिर तथा बांधवगढ़ जैसे स्थल न केवल पौराणिक आख्यानों से जुड़े हुए हैं, बल्कि इनका ऐतिहासिक विकास कलचुरि तथा बघेल जैसे राजवंशों के संरक्षण एवं योगदान से भी गहनता से सम्बद्ध रहा है। इन स्थलों के अध्ययन से यह भी सिद्ध होता है कि बघेलखण्ड की धार्मिक परम्परा में शैव, शाक्त तथा वैष्णव सम्प्रदायों के साथ-साथ स्थानीय जनजातीय आस्था का भी सुदृढ़ समन्वय विद्यमान रहा है, जो इस क्षेत्र को सांस्कृतिक बहुलता की दृष्टि से विशिष्ट बनाता है।

यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि इन धार्मिक स्थलों का ऐतिहासिक महत्व होने के बावजूद इनका समुचित संरक्षण, वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण तथा पर्यटन अवसंरचना अभी भी अपेक्षित मानकों से पीछे है। बांधवगढ़ में हाल में प्राप्त पुरातात्विक अवशेष इस बात के प्रमाण हैं कि बघेलखण्ड के धार्मिक इतिहास का एक बड़ा भाग अभी भी अनावृत है, जिसके सुव्यवस्थित उत्खनन एवं शोध से क्षेत्रीय इतिहास की नई परतें उजागर हो सकती हैं।

यह अध्ययन इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि बघेलखण्ड के धार्मिक स्थलों की ऐतिहासिकता केवल स्थापत्य अथवा पौराणिक आख्यानों तक सीमित नहीं है, अपितु यह क्षेत्र की सामाजिक स्मृति, राजनीतिक निरंतरता तथा सांस्कृतिक बहुलता का भी जीवंत दस्तावेज है। कलचुरि, बघेल तथा अन्य राजवंशों के योगदान से लेकर स्थानीय जनजातीय परम्पराओं के समावेशन तक, इन स्थलों का विकास-क्रम बघेलखण्ड की सामासिक संस्कृति का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है। सम्पूर्णतः यह कहा जा सकता है कि बघेलखण्ड के धार्मिक पर्यटन स्थल न केवल आस्था के केन्द्र हैं, अपितु यह क्षेत्रीय पहचान, ऐतिहासिक निरंतरता तथा सम्भावित आर्थिक विकास के भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जिनके समुचित संरक्षण एवं विकास की दिशा में ठोस एवं समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। यह भी स्पष्ट है कि जब तक इन स्थलों का अध्ययन एक-दूसरे से पृथक करके किया जाता रहेगा, तब तक बघेलखण्ड की सम्पूर्ण धार्मिक भूगोल की समग्र समझ विकसित नहीं हो सकेगी, अतः भविष्य के शोध कार्यों में इन स्थलों के अंतर्संबंधों पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

सुझाव-

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर बघेलखण्ड के धार्मिक पर्यटन स्थलों के संरक्षण एवं विकास हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं। सर्वप्रथम, चित्रकूट, अमरकंटक, मैहर, देवतालाब तथा बांधवगढ़ जैसे स्थलों को एक संयुक्त धार्मिक पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित किया जाना चाहिए, जिससे पर्यटक एक ही यात्रा में बघेलखण्ड की सम्पूर्ण धार्मिक विरासत का अनुभव प्राप्त कर सकें। द्वितीयतः, बांधवगढ़ क्षेत्र में प्राप्त प्राचीन मंदिरों,

गुफाओं तथा अभिलेखों के वैज्ञानिक संरक्षण एवं सतत उत्खनन कार्य हेतु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा राज्य पुरातत्व विभाग के मध्य समन्वित योजना बनाई जानी चाहिए।

तृतीयतः, देवतालाब जैसे स्थलों पर प्रचलित मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम की सौंदर्यीकरण एवं विस्तारीकरण योजनाओं को समय-सीमा के भीतर पूर्ण किया जाना चाहिए तथा शेष स्थलों पर भी इस प्रकार की योजनाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। चतुर्थतः, स्थानीय विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थानों में बघेलखण्ड के धार्मिक इतिहास पर केन्द्रित पाठ्यक्रम एवं शोध परियोजनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे नई पीढ़ी में क्षेत्रीय इतिहास के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो सके।

पंचमतः, डिजिटल माध्यमों, वृत्तचित्रों तथा सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग द्वारा इन धार्मिक स्थलों का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए, जिससे बघेलखण्ड को भारत के प्रमुख धार्मिक पर्यटन गंतव्यों में समुचित पहचान प्राप्त हो सके। षष्ठतः, गोविंदगढ़ तथा रीवा दुर्ग जैसे रियासतकालीन स्थलों के संग्रहालयों को आधुनिक संग्रहण एवं प्रदर्शन तकनीकों से सुसज्जित किया जाना चाहिए, जिससे आगंतुकों को बघेलखण्ड के धार्मिक एवं राजनीतिक इतिहास की समग्र जानकारी सुगमता से प्राप्त हो सके। सप्तमतः, चित्रकूट-अमरकंटक-मैहर-रीवा-बांधवगढ़ मार्ग पर यातायात, आवास तथा स्वच्छता सुविधाओं का स्तरीकरण किया जाना चाहिए, जिससे दूरस्थ राज्यों से आने वाले श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को असुविधा का सामना न करना पड़े। अंततः, स्थानीय समुदायों को इन धार्मिक स्थलों के संरक्षण एवं पर्यटन प्रबंधन में सक्रिय रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिससे धार्मिक पर्यटन का लाभ सीधे स्थानीय जनजीवन तक पहुँच सके और सतत विकास का लक्ष्य प्राप्त हो सके।

अंततः यह भी सुझाव दिया जाता है कि रीवा, सतना, अनूपपुर तथा उमरिया जिलों के जिला प्रशासन, मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा स्थानीय विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के मध्य एक स्थायी समन्वय समिति गठित की जानी चाहिए, जो बघेलखण्ड के धार्मिक पर्यटन स्थलों के संरक्षण, शोध तथा विकास कार्यों की नियमित समीक्षा एवं मार्गदर्शन कर सके। इस प्रकार की संस्थागत व्यवस्था से न केवल इन स्थलों का समुचित संरक्षण सुनिश्चित होगा, अपितु बघेलखण्ड की समृद्ध धार्मिक एवं ऐतिहासिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रखा जा सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रीवा राज्य गजेटियर, मध्य प्रदेश शासन, भोपाल।
2. बघेल वंश एवं रीवा रियासत का इतिहास, स्थानीय इतिहास संकलन।
3. शिवपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
4. स्कन्दपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
5. वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर।
6. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, वार्षिक प्रतिवेदन, बांधवगढ़ उत्खनन सर्वेक्षण।
7. मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम, वार्षिक प्रतिवेदन एवं परियोजना दस्तावेज।
8. जिला सांख्यिकीय हस्तपुस्तिका, रीवा, सतना, अनूपपुर, उमरिया जिले, मध्य प्रदेश शासन।
9. चित्रकूट धाम : सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, स्थानीय शोध साहित्य।
10. अमरकंटक : नर्मदा उद्गम एवं कलचुरि स्थापत्य, ऐतिहासिक शोध लेख।
11. मैहर शारदा देवी मंदिर : परम्परा एवं इतिहास, स्थानीय शोध साहित्य।
12. देवतालाब शिव मंदिर, रीवा : ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक विवरण, स्थानीय शोध साहित्य।
13. गोविंदगढ़ दुर्ग एवं महल, रीवा : ऐतिहासिक स्थापत्य अध्ययन, स्थानीय शोध साहित्य।
14. बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्र में पुरातात्विक उत्खनन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण प्रतिवेदन।